Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 3 | ISSUE : 11 | NOV 2017

मानव जीवन में मूल्यों का महत्व

डॉ. बोबिन्द्र [1]

[1] फैकल्टी: श्री साईं महाविद्यालय फतेहपुर पुटटी ,बागपत {उत्तर–प्रदेश}

ABSTRACT

Keywords:

प्रस्तावना **(Introduction)**:

आज हम 21वी सदी में सांस ले रहे हैं जिसको कि कम्पयुटर का युग(Age of Computer) भी कहा जाता हैं। इसमें हम अपने घर पर ही रहकर Internet के द्वारा सारे संसार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। मानव आज चॉद पर जाकर चॉद का अध्ययन कर रहा हैं। हमने युद्व के क्षेत्र मे भी अकूत क्षमताऐ प्राप्त कर ली हैं। अणु बम व परमाणु बम मानव के विनाश के लिए तैयार किये जा चुके हैं। लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि मानवता की जडे खोखली होती जा रही हैं। पग– पग पर मानवता दम तोड रही हैं। कुछ भी घटनाऐं आज के युग मे अप्रत्याशित नहीं रह गयी हैं। मानवता को शर्मशार करने वाली घटनाऐ दिनों दिन बढती जा रही हैं। समाज दिनोंदिन निचले स्तर पर जा रहा हैं। अर्थात व्यक्ति मूल्यहीन होता जा रहा हैं। यदि थोडा सा भी समय निकाल कर समाज पर ध्यान केन्द्रित किया जाए तो गिरती हुई मानवता एंव मुल्यपरक शिक्षा को कुछ हद तक बचाया जा सकता हैं। आने वाली पीढी को मुल्यपरक शिक्षा दिये बिना इसको बचा पाना सम्भव नही हो पायेगा जो समाज के लिये बहुत ही हानिकारक सिद्व होगा।

मूल्य की उत्पत्ति **(Origin of Values)**: मूल्य को इग्लिंश भाषा मे वैल्यू (Value) कहते हैं। वैल्यू शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के वैलियर (Valere) से हुई है जिसका अर्थ है–योग्यता (Ability), उपयोग्यता (Ulity) व महत्व (Importance)। अर्थात व्युत्पति के आधार पर हम कह सकते कि व्यक्ति या वस्तु का वह गुण जिसके कारण उसका उपयोग या महत्व जाना जाता है,मूल्य कहलाता हैं। भावात्मक द्वष्टि से मानव के गुण को भी अभिव्यक्त करता हैं।

मूल्य का अर्थ **(Meaning of Values)**: मूल्य वह शिक्षा है जों व्यक्ति को उचित एवं नैतिक सकंल्प करने में सहायक होती है,उसके आचरण और व्यवहार को मूल्य सम्मत स्वरुप प्रदान करती है। मूल्य शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के नैतिक एंव आध्यात्मिक विकास की प्रकिया अग्रसित होती है। व्यक्ति के चरित्र का निर्माण होता है। मूल्य वे कसौटिया है जिनके आधार पर अच्छे,बुरे,सही गलत,कारणीय और अकारणीय का निर्णय किया जाता हैं। सामाजिक विज्ञानो के सन्दर्भ में,मूल्य वे सांस्कृतिक अथवा व्यक्गित धारणाए या आदर्श हैं जिनके द्वारा वस्तुओं अथवा घटनाओं की एक दूसरे के साथ तुलना की जा सकती हैं,उन्हे स्वीकार अथवा अस्वीकार किया जा सकता हैं तथा सापेक्षिक रुप में यह देखा जा सकता हैं कि क्या वांछित अथवा अवांछित हैं,क्या अच्छा या बुरा हैं,क्या अधिक ठीक और कम ठीक हैं।

मूल्य की परिभाषाए **(Difinitions of Values)**: मूल्य को कुछ प्रमुख शिक्षाशास्त्रियों एवं दार्शनिकों ने परिभाषित करने का प्रयास किया हैं जो इस प्रकार हैं-अरबन **(Urban)-**मूल्य वह,जो मानव इच्छाओं की तुष्टि करें। काने (Kane)- मूल्य वे आदर्श,विश्वास या प्रतिमान है जिनको एक समाज या समाज के अधिकांश सदस्यों ने ग्रहण कर लिया हैं। मैकेन्जी (Mackenze)- सुख को मूल्य की अनुभूति के रुप मे व्यक्त किया जा सकता हैं। आलपोर्ट (Allport)- मूल्य वे मानव विश्वास है जिसके आधार पर मनुष्य वरियता प्रदान करते हुए कार्य करता हैं। अथवा मूल्य वे विश्वास हैं जिन पर व्यक्ति प्राथमिकता से कार्य करता हैं। मरफी एवं न्यूकाम **(Murphy & Newcomb)-** मूल्य का अर्थ लक्ष्य प्राप्ति की और उन्मुख होता हैं। समाज वैज्ञानिक,सामाजिक मूल्य और व्यक्गित मूल्य में अन्तर करते हैं। ननली (Nunnally) के अनुसार–मूल्य जीवन के लक्ष्यों तथा जीवन शैली से सम्बधित होते हैं। ब्राइटमैन (Brightman) के अनुसार–मूल्यो से तात्पर्य किसी पसन्द से होता हैं।

मूल्यो का वर्गीकरण **(Classifications of Values):** समय तथा परिस्थितियों की आवश्यकताओं के अनुरुप दार्शनिकों और सस्थाओं ने मूल्यों को वर्गीकरत करने का प्रयास किया हैं। कुछ प्रमुख वर्गीकरण इस प्रकार दर्शाये गए है –सन 1928 में स्प्रेंजर (Spranger) ने मूल्यो को छः प्रमुख भागो में विभक्त किया हैं–सैद्वान्तिक मूल्य (theoretical values),आर्थिक मूल्य (economic values),सौन्दर्यात्मक मूल्य (aesthetic values),

सामाजिक मूल्य (social values),राजनैतिक मूल्य (political values) एवं धार्मिक मूल्य (religious values)| गलीटली (Galightly) के अनुसार– आवश्यक मूल्य (essential values) एवं कियात्मक मूल्य (operational values)|कारनेल (Karnele) के अनुसार–निश्चयात्मक मूल्य (asserted values) एवं कियात्मक मूल्य (operational values)|पेरी (Parry) के अनुसार–धनात्मक मूल्य (positive values),नकारात्मक मूल्य (negative values) एवं वास्तविक मुल्य (actual values)|टरनर (Turner) के अनुसार–मूर्त मूल्य (abstract values) एवं अमूर्त मूल्य (concrete values)|आलपोर्ट एवं वरनन (Allport & Vernon) के अनुसार–सैद्धान्तिक मूल्य (theoretical values),आर्थिक मूल्य (economic values),सौन्दर्य मूल्य (aesthetic values), सामाजिक मूल्य (social values) राजनैतिक मूल्य (political values) एवं धार्मिक मूल्य (religious values)|मारगिनो (Marginau) के अनुसार–वास्तविक मूल्य (actual values) एवं आदर्शात्मक मूल्य (normative values)|लेविस (Levis) के अनुसार–आन्तरिक मूल्य (instrinsic values),वाहय मूल्य (extrinsic values),अर्न्तभूत मूल्य (inherent values) एवं सहायक मूल्य (instrumental values)|शावर एवं स्टौंग (Shaver & Strong) के अनुसार–सौन्दर्य मूल्य (aesthetic values),नैतिक मूल्य (moral values) एवं सहायक मूल्य (instrumental values)|अरबन (Aurban) के अनुसार–

1. जैविक मूल्य (biological values) –शारीरिक मूल्य (physical values), आर्थिक मूल्य (economic values),एवं मनोरचनात्मक मूल्य (instrumental values)।

2.सामाजिक मूल्य (social values) –चरित्र मूल्य (character values) एवं साहचर्य मूल्य (association values)।

3. पराजैविक मूल्य (hyper organic values)–बौद्धिक मूल्य (intellectual values),धार्मिक मूल्य (religious values) एवं सौन्दर्य मूल्य (aesthetic values)। वैसे सामान्यतः मूल्य को दो भागो मे विभक्त किया गया हैं–आन्तरिक मूल्य (internal values) एवं वाहय मूल्य (external values)। व्यापक द्वष्टि से मूल्यो को 7 प्रमूख भागो मे विभक्त कियय गया है–व्यक्तिगत मूल्य (personal values), सामसजिक मूल्य (social values), शैक्षिक मूल्य (educational values), राजनैतिक मूल्य (political values), धार्मिक मूल्य (religious values), चारित्रिक मूल्य (character values) एवं सौन्दर्यात्मक मूल्य (aesthetic values)|NCERT नई दिल्ली के अनुसार मूल्य 83 प्रकार के होते हैं।

मूल्य का महत्व **(Importance of Values):** आज के युग मे मूल्य के महत्व को कम नहीं समझा जा सकता हैं,क्योकि इसके बिना समाज ग्रत में चला जायेगा। स्वामी रामकृष्णन परमहंस के शब्दो में–चरित्रवान बनो,जगत अपने आप मुग्ध हो जायेगा। रविन्द्र नाथ टैगौर ने चरित्र को मानव के विकास की धुरी माना हैं। महात्मा गांधी के शब्दो में–चरित्रा के अभाव मे केवल बौद्विक ज्ञान सुगन्धित शव के समान हैं। डॉ0एस0 राधाकृष्णन के शब्दो मे–चरित्र,संसार की प्रेरणा शक्तियो मे सबसे बडी शक्ति हैं।चरित्र से ही दढ शक्ति उत्लन्न होती है तथा मानवीय गुणो का विकास होता हैं और शाश्वत मूल्यो की प्राप्ति होती हैं।

मूल्यो का विकास **(Development of values)**: यदि गौर से देखा जाए तो आज के हालात पर मूल्य के विकास में निम्न प्रकार की भूमिका मुख्य मानी जा सकती हैं,जिसका वर्णन कुछ इस प्रकार हैं–

1.मूल्य के विकास मे परिवार की भूमिका **(The role of family in the development of values):** बच्चा जब मॉ के गर्भ मे होता है,तो मनोवैज्ञानिको के अनुसार जब से ही वह सीखना प्रारम्भ कर देता हैं। द्वापर युग मे महाभारत के अभिमन्यु नामक पात्र इसका जीता जागता उदाहरण हैं। जन्म के समय बच्चा सर्वप्रथम अपने परिवार के आगंन में ही ऑखें खोलता हैं। उस समय उसका परिवार ही उसका संसार होता हैं। बच्चे के जीवन पर परिवार के वातावरण का सीधा प्रभाव पडता हैं। जे0बी0वाटसन (J.B.Watson) नामक मनोवैज्ञानिक ने तो यहॉ तक कहा हैं कि आप मुझे 10 बच्चे दे दीजीए,मै उनको जैसा चाहे वैसा बना सकता हूँ,क्योकि उनको मै वैसा ही वातावरण प्रदान करुगां जो मुझको उनको बनाना हैं। अर्थात वातावरण का प्रभाव बच्चे के जीवन पर सीधा–सीधा पडता हैं,जो उसके मूल्य को भी दर्शाता हैं। बच्चे को उसका परिवार जैसे मूल्य प्रेषित करता हैं,बच्चा उसकी नकल करता हैं क्योकि बच्चा उस समय भावनात्मक रूप से सीखता हैं। या उसको यह कहे कि बच्चे पर परिवार का प्रभाव सबसे ज्यादा होता हैं,क्योकि वह उस समय सबसे ज्यादा अपने परिवार के साथ ही बिताता हैं। परिवार मे यदि माता–पिता का व्यवहार झगडालू होता हैं तो बच्चे पर भी उसका नकारात्मक प्रभाव पडता हैं। इसके विपरीत यदि परिवार का वातावरण हमेशा शांन्त प्रिय व विनोदी होता हैं तो बच्चे का व्यक्तित्व भी वैसा ही ढलता चला जायेगा,क्योकि बच्चा उस समय कच्ची मिटटी के समान होता हैं तथा उसमें वही बीज अकुंरित होते हैं जो उस समय परिवार उसमे बोता हैं,क्योकि मनोवैज्ञानिको ने भी कहा हैं कि–Personality is the product of environment and heredity.यदि हम अपने शास्त्रो के कुछ पन्ने पलटे तो हमे हजारो ऐसे उदाहरण देखने को मिल जायेगें जिससे यह सिद्व होता हैं कि व्यक्ति के मूल्य विकास मे परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण होती हैं। बच्चे के मूल्य विकास मे परिवार मे सबसे ज्यादा भूमिका माता–पिता की देखी गई हैं। अनुसन्धानो मे यह भी देखा गया हैं कि यदि बच्चा संयुक्त परिवार मे ज्यादा समय व्यतीत करता हैं तो उसका व्यवहार व मूल्य,एकांकी परिवार की अपेक्षा अधिक उच्च व धनात्मक पाये गये हैं। कहने का तात्पर्य यह हैं कि यदि परिवार की भूमिका धनात्मक हैं तो मूल्य को अधिक बढावा देती हैं क्योकि कहा गया हैं कि बच्चे की जिन्दगी मे परिवार प्रथम पाठशाला हैं जो मूल्य के विकास को प्रभावित करती हैं।

2.मूल्य के विकास मे समाज की भूमिका **(The role of society in the development of values):** समाजशास्त्रियों के अनुसार जहॉ दो या दो अधिक व्यक्तियों का समूह होता हैं,समाज कहलाता हैं। बच्चा जब परिवार के आगंन से निकलर बाहर आता हैं तो उसको परिवार से क्या मूल्य मिले हैं,वह उन्ही को लेकर बाहर आता हैं। लेकिन जैसे ही वह समाज के सम्पर्क मे आता है तो उसमें बुराईया आनी शुरु हो जाती हैं। रुसो ने तो यहॉ तक कहा हैं कि व्यक्ति मे बुराई समाज के द्वारा उत्पन्न होती हैं। अर्थात वह बुराई या नकारात्मक सोच समाज से सीखता हैं। बच्चा जब अपने परिवार के समाज से निकलकर दूसरे समाज में प्रवेश करता हैं। यहॉ पर उसको तरह–तरह के समाज के साथ रहना पडता हैं। वह समाज मे प्रचलित घटनाओं से धीरे–धीरे परिचित होना शुरु होता हैं। अब वह एक जिज्ञासु प्राणी के रुप मे स्थापित हो चुका हैं। वह अपने परिवार के समाज से अलग समाज को देखता हैं। बलात्कार,चोरी,डकैती जैसी असामाजिक घटनाओं को देखता हैं जिसकी उस पर बहुत गहरी छाप पडती हैं। अब पह धीरे–धीरे समाज को नजदीक से देखना प्रारम्भ करता हैं। वह अपने आस–पडोस मे होने वाली घटनाओं को देखता हैं और वह मन ही मन सोचना प्रारम्भ करता हैं। यदि बाहर का समाज उसकी नकारात्मक सीख को बढावा देता हैं तो वह मूल्यहीन होता चला जाता हैं,जो आगे चलकर अपने व समाज के लिये बहुत ही हानिकारक सिद्ध होता हैं। बैर बाधना उसको समाज ही सिखाता हैं। समाज में रहकर ही वह असामाजिक कृत्य करने प्रारम्भ कर देता हैं,क्योंकि वह नकारात्मक सोच रखने लगता हैं। वह सोचता हैं कि उसकी जैसी सोच के भी अनेक लोग मौजूद हैं। यदि समय रहते हुए उसकी नकारात्मक सोच को न बदला गया तो वह एक खतरनाक प्राणी बन जाएगा जो उसको व उसके परिवार को भी खतरे मे डाल देगा। कहने का तात्पर्य यह हैं कि जिन्दगी मे समाज का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान होता हैं। प्रयास करना चाहिए कि समाज से बच्चो के अन्दर नकारात्मक मुल्य न पनपने दिए जाए और उसको ऐसे समाज की सगंति प्रदान करे जिससे समाज का रचनात्मक विकास हो न कि विध्वसंनात्मक।

3.मूल्य के विकास मे स्कूल की भूमिका **(The role of school in the development of values):** विद्यालय वह स्थान हैं जहॉ शिक्षा प्रदान की जाती हैं। विद्यालय एक ऐसी सस्था हैं जहॉ बच्चों के शारीरिक,मानसिक ,बौद्धिक एवं नैतिक गुणों का विकास होता हैं। विद्यालय शब्द के लिए आगंल भाषा में स्कूल (school) शब्द का प्रयोग किया जाता हैं,जिसकी उत्पत्ति ग्रीक(Greek) शब्द Skohla या Skhole से हुई है जिसका अर्थ होता हैं–अवकाश। यह अर्थ कुछ विचित्र सा लगता हैं परन्तु वास्तविकता तो यह हैं कि प्राचीन यूनान में अवकाश के स्थलों को ही विद्यालय कहा जाता था। स्कूल एक ऐसा पवित्र स्थान हैं जहां हमें अनगिनत ज्ञान मिलता हैं लेकिन आजकल विज्ञान काफी विकसित हो गया हैं। बच्चें के मूल्य के विकास में स्कूल की बहुत अधिक भूमिका होती हैं।कहा भी गया हैं कि– एक स्कूल एक लघु समाज का रुप होता हैं। कहते हैं कि बच्चा घर के बाद जहॉ सबसे ज्यादा समय व्यतीत करता हैं वह हैं स्कूल,जो उसका समाज होता हैं। वहॉ पर वह भिन्न–भिन्न प्रकार के समाज,जाति,व रंग रुप के व्यक्तियों को देखता व मिलता हैं। वह उनसे शिक्षा ग्रहण करता हैं।कहतें हैं कि शिक्षा दो रुपो मे प्रदान की जाती हैं जिसको कि क्रमश: सैद्धान्तिक व व्यवहारिक (theoretical and practical) कहते हैं। दुर्भाग्यवश आज के स्कूल सैद्धान्तिक शिक्षा तो काफी अच्छी व महगीं प्रदान कर रहे हैं,किन्तु व्यवहारिक व मानवीय मूल्यपरक शिक्षा से दूर होते जा रहे हैं। यदि गौर से देखा जाए तो आज के विद्यार्थियों ने स्कूल मे अराजकता व डर का माहौल उत्पन्न कर दिया हैं। स्कूल में जो मानवीय मूल्य परक शिक्षा दी जानी चाहिए थी,वह आज की भाग दौड की दुनिया में बहुत पीछे रह गयी हैं। स्कूल मात्र डिग्रियां देने के माध्यम रह गये हैं। नैतिक शिक्षा,सस्कृति का ज्ञान,मानवीय मूल्यपरक शिक्षा कहीं कोसो दूर रह गई हैं। अध्यापक भी सिर्फ अपने कार्य तक ही सीमित रह गये हैं। अर्थात येन केन प्रकरेण पाठयक्रम को पूरा कराना अपना कर्तव्य मान बैठे हैं। यदि कोई शिक्षक कुछ करना भी चाहता हैं तो सरकार उन पर विभिन्न प्रकार का बोझ लाध देती हैं,जिससे अप्रत्यक्ष रुप से शिक्षक व विद्यार्थी दोनों के मूल्य प्रभावित होते हैं। जहां स्कूल एक विद्या का मन्दिर माना जाता था,वही आज आधुनिकता की चका–चौंध ने सब कुछ समाप्त कर दिया हैं। गुरु व शिष्य का सम्बन्ध मात्र किताबो तक का रह गया हैं। मानवीय मूल्य दिनोदिन ह्रास होतें जा रहे हैं। शिक्षा व्यवस्था चरमरा गई हैं। बच्चों को दण्ड से अवमुक्त करना भी एक मानवीय मूल्य के पतन का कारण हैं। स्कूल में बच्चों के मन से डर की भावना निकालना भी मूल्यहीन शिक्षा को बढावा देना हैं। आज स्कूल का वातावरण भी बच्चो में मानवीय मूल्य को दूर करता जा रहा हैं। बच्चो में मान–सम्मान की भावना जैसे नष्ट सी होती जा रही हैं। नकारात्मक विचार की भावना विकसित होती जा रही हैं। यदि समय रहते जागरुकता न पैदा की गई तो स्कूल अपना अस्तित्व ही खो देगें,जो मानवीय मूल्य की बहुत बडी क्षति होगी। अर्थात मूल्य के विकास में स्कूल की भूमिका सर्वाधिक मानी गई हैं।

4.मूल्य के विकास में मीडिया की भूमिका **(The role of media in the development of values):** आज की आधुनिकता भरी जिन्दगी में मूल्य के विकास व पतन में मीडिया की भूमिका भी सबसे अहम आंकी गई हैं। आज समाज का हर व्यक्ति चाहे वह अमीर हो या गरीब हो,महिला हो या पुरुष हो,छोटा हो या बडा हो,सब किसी न किसी रूप में मीडिया से जुडे हुए हैं। वैसे तो मीडिया को समाज का मजबूत व चौथा स्तम्भ माना गया हैं। लेकिन मीडिया हमें आज क्या दिखा रही हैं और हम क्या देख रहे हैं। यह एक बहुत बडा प्रश्न वाचक चिन्ह हैं ? आज जिस तरह से मानवीय मूल्य का पतन हो रहा हैं,उसकी जिम्मेदार मीडिया भी हैं। आज हम ऐसे सीरियल बनाते हैं कि जिसको परिवार के एक साथ बैठ कर नही देख सकते हैं। बलत्कार जैसी घिनौनी घटनाओ को मीडिया कुछ इस तरह दिखाती हैं,जैसे कि मानो सारी गलती उस महिला ने ही की हो जिसके साथ यह घिनौनी घटना घटित हुई हैं। मीडिया के माध्यम से ही अश्लील मूवी व चैट में बढौतरी हुई हैं। जाति के भेदभाव का जहर मीडिया की ही देन हैं। एक धर्म को बहुत अच्छा दिखा देना तथा दूसरे धर्म को हीन दर्शाना जैसे उनके लिए एक आम बात हो गई हैं। कटटरता को बढावा देना मीडिया की देन हैं जिसको की आज के युवा समझ नहीं पा रहे हैं। फिल्मों में खुले आम अर्द्धनग्न सीन,तम्बाकू का सेवन,नशे के तरीके,सोच–समझकर हत्या करना,महिलाओ व बच्चों को उठा लेना,कम समय में धनवान बनना,पढाई से हटकर चलना,सार्वजनिक स्थानों में धमकी देना इत्यादि जैसे सीन दिखाना एक नकारात्मक मूल्य को बढावा देता हैं। क्योंकि बच्चा जिस चीज को देखकर सीखता हैं,वह उसमें अमिट प्रभाव छोडती हैं। ऐसे अनेक उदाहरण मिले हैं कि जिससे बच्चे ने जो सीन फिल्मों में देखा हैं,वह उसी से प्रभावित होकर नकारात्मक कार्य करना शुरू कर देता हैं जो आगे चलकर समाज के लिए बहुत ही हानिकारक सिद्ध होता हैं। मीडिया को चाहिए की वह अपनी सीमा को न लाघें तथा धनात्मक मूल्य परक कहानियॉ भी दिखाये जिससे समाज को एक धनात्मक संदेश मिले तथा मानवीय मूल्य मजबूत हो सके।

यदि थोडा सा गौर किया जाए तो हम यह सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि भारत को आखिर वालीवुड ने दिया क्या हैं ? शायद यें–बलात्कार,गैंग रेप करने के तरीके,विवाह किये बिने लडका–लडकी का शारीरिक सम्बन्ध बनाना,विवाह के दौरान लडकी को मडंप से भगा लेना,चौरी डकैती के तरीके। भारतीय सस्कारो का उपहास उडाना,लडकियो को छोटे कपडे पहने की सीख देना जिसे फैशन का नाम देना। दारू,सिगरेट,चरस,गांजा कैसे पिया और खाया जाए,गुंडागर्दी करके हप्ता वसूली करना। भगवान का मजाक बनाना और अपमानित करना,पूजा–पाठ,यज्ञ,पाखण्ड हैं और नमाज पढना ईश्वर की सच्ची पूजा हैं। भारतीयो को अग्रेंज बनाना व भारतीय सस्कंति कों मूर्खता पूर्ण बताना और पश्चिमी सस्कंति को श्रेष्ठ बताना। मॉ–बाप को वद्धाश्राम में छोड के आना। गाय पालन का मजाक बनाना और कुत्तो को उनसे श्रेष्ट बताना व पालन सिखाना। रोटी हरि सब्जी खाना गलत बल्कि रेस्टोरेन्ट में पिज्जा,बर्गर,कोल्ड डिंक और नॉनवेज खाना श्रेष्ठ। पडिंतो को जोकर के रूप में दिखाना,चोटी रखना या यज्ञोपवीत पहना मूर्खता हैं। मगर बालो के अजीबो–गरीब स्टाइल जैसे गजनी रखना व क्रास पहनना श्रेष्ठ हैं उससे आप सभ्य लगते हैं। शुद्ध हिन्दी या सस्कृत बोलना हास्य वाली बात हैं और उर्दू या अग्रेजी बोलना सभ्य पढा–लिखा और अमीरी वाली बात बताना।

अन्त मे हम कह सकते हैं कि मानवीय मूल्यो को बढाने में या विकसित करने में व्यक्ति को स्वंय जागरूक होना पडेगा, तभी समाज को मानवीय मूल्य प्रदान कर सकते हैं। आज के समय में मानवीय मूल्य की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य हैं ताकि हमारे बच्चों व समाज को ग्रत में जाने से बचाया जा सके क्योकि आज के समय में हमारे चारो ओर नकारात्मकता कुछ हद से ज्यादा ही भरी पडी हैं। पग–पग पर मानवता को शर्मशार करने वाली घटनाए होती जा रही हैं जिसका कि एक मात्र बचाव अपने मूल्य को बचाना व सुरक्षित करना हैं जिससे कि मानवता का हनन होने से बचाया जा सके और मानवीय मूल्यों की रक्षा की जा सके।

REFERENCES

1. Allport, G.W; Vernon, P.E; & Lindzey, G. (1960). Study of Values: A Scale for Measeering the Deminents Interest in Personality, 3rd.New York: Houghton Mission.

2. Allan Simiyu Kundu Michal Korier & Patrick Kerre. (2012). A Study of Effects of Comparative Strategies on Shaewholder Values among Selected Firms Listed Nairobi Stock Exchange, Kenya. International Journal of Current Research, Vol.3, Issue 10, pp145-153.

3. Balaji, D.Chitra. (2014). A Study of Human Values and Presonality of B.Ed Trainees in Vellore District.International Educational Science Research Journal.DOI:10.21276/2455-2955.

4. Bobinder. (2007). A Study of Machiavellianism and Anxiety among Students. Indian Journal of Human Relations.Vol.32, 12-14.

5. Bobinder. (2015). A Comparative Study of Values among Students of Joint Family and Nuclear Family. International Sodh Sandesh.Vol.3, No. 2.

6. Chitra, Lakshmi. (2009).Value Education: An Indian Perspective on the Need for Moral Education in a Time Rapid Social Change. Journal of College and Character. DOI: 10.2202/1630-1639, 1077.

7. Kumar, Varinder. (2014).Human Values and Prosfessional Ethics. Kalyani Publishers, Ludhiana. ISBN: 978-93-272-4630-8.

8. Kumar, Neeraj. (2014). Human Values and Professional Ethics. Aggarwal Publication, Agra.

9. Lovett, Benjamin J.Jordon, Alexander H. (2005). Moral Values, Moralism and the 2004 Presidential Election, Analysis of Social Issues and Public Policy. Vol.5 (1), 165-175.

10. Pant, P.S. (2010).Education for Values in Schools-A Framework Department of Education Psychology and Foundation Of Education (NCERT), New Delhi.

11. Passi, B.K. & Singh, Prabakar.(2012).Value Education.H.P.Bhargava Book House,Agra.

12. Sharma, R.A. (2013).Human Value of Education. R.Lall Book Depot.Meerut, Uttar Pradesh.